गाँधी मार्ग

मार्च-अप्रैल 2024

सीधी राह का सफर

० महात्मा गांधी ० सौमित्र राय ० 'अज्ञेय' ० स्टीव जॉब्स ० नरेंद्र दाभोलकर ० कुमार प्रशांत

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक
वर्ष 66, अंक 2, मार्च-अप्रैल 2024

गांधी शांति प्रतिष्ठान

*

1. **व्याख्यानः** क्यों हमारा संविधान...	कुमार प्रशांत	3
2. **दस्तावेजः** सरकार की सत्ता को...	महात्मा गांधी	24
3. **नजरियाः** भूख बनी रहे, मूर्खता साथ...	स्टीव जॉब्स	29
4. **देश-परदेशः** बीसवीं शती का गोलोक	'अज्ञेय'	36
5. **अंधविश्वासः** लड़ाई का एक मोर्चा...	डॉ. नरेंद्र दाभोलकर	39
6. **जवाब?ः** अगर रामलला ने पूछा	सौमित्र रॉय	43
7. **खोजः** गांधी की खोज	राम मोहन राय	46
8. **आहटः** चलो गांधी की ओर	अरविंद मोहन	50
9. इस चुनाव में फैसला यह होना है कि जनता जीतेगी या हारेगी?		53
10. टिप्पणियां		58
11. पत्र		63

आवरण : सीधी राह का सफर : जिधर से भी, जिधर भी चलो, उलझनों की कमी नहीं है. प्रलोभनों के, आशंकाओं के, एक-दूसरे को काटने वाले रास्तों के जाल में हम अक्सर उलझ जाते हैं और जाना किधर था और चले कहीं और जाते हैं. गांधी कहते हैं कि उलझते वे ही हैं जो सीधी राह नहीं चलते हैं. लोकतंत्र सीधी राह का वैसा ही सफर है जिसे हमारा संविधान रास्ता दिखाता है. गांधीजी के एक रेखाचित्र को लेकर कलाकार की कल्पना.
आवरण-सज्जा हमेशा की तरह **कीर्ति** ने की है.

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क. दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें. अपना शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के नाम भेजें. ऑनलाइन भुगतान के लिए केनरा बैंक खाता नं. 0158101030392 IFSC CODE : CNRB 0000158.

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध :** मनोज कुमार झा **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित
फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, **Email:** gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नियर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

व्याख्यान

सीधी राह का सफर

क्यों हमारा संविधान हमें बोझ लगने लगा है?

० कुमार प्रशांत

संविधान की किताब के सामने सिर झुकाने वाले इस दौर में संविधान की जितनी लानत-मलामत की जा रही है, वह सब अत्यंत क्लेषकारी है. मात्र 73 सालों में यह संविधान हमें क्यों इतना खटकने लगा है कि हम उसकी पूजा करने का स्वांग भर रचते हैं, उसे मानते नहीं हैं? यह कोई रहस्य नहीं, अपने भीतर छुपा एक चोर है जो बार-बार बाहर झांक रहा है. गांधी कहते हैं कि उलझते वे ही हैं जो सीधी राह नहीं चलते हैं. लोकतंत्र सीधी राह का सफर है जिसे हमारा संविधान रास्ता दिखाता है

आप सब जो यहां मेरी बात सुनने आए हैं, उनका बहुत आभार. आभारी मैं इस संस्थान के मंत्री अनिलजी का भी हूं जिन्होंने मुझे इस वर्ष के व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया. मंच पर राजेंद्र भवन की अध्यक्ष मीरा कुमारजी हैं, हम सबकी आदरणीया सईदा हमीदजी हैं. आप सबने मुझे यह अवसर दिया इसके लिए मैं राजेंद्र भवन का आभारी हूं. इन दिनों माहौल ऐसा बना है कि भाषण आदि सुनने तो कुछ लोग आ भी जाते हैं, बातचीत करने, सोचने-विचारने के लिए लोग नहीं आते. हमारा आपसी संवाद नहीं बनता है. लोकतंत्र का यह सबसे बड़ा तत्व है जिससे हम चूक रहे हैं. लोकतंत्र हमेशा संवाद से ही खड़ा होता है, संवाद से ही बड़ा होता है. संवाद छूटता है तो लोकतंत्र भी छूटता है. हम इस त्रासदी से गुजर रहे हैं. इसलिए राजेंद्र प्रसाद अकादमी का भी और राजेंद्र

भवन ट्रस्ट का भी मैं बहुत आभारी हूं कि उन्होंने एक ऐसा मंच बचाकर रखा है जिस पर संवाद किया जा सकता है.

जब मैंने व्याख्यान के लिए यह विषय चुना और आज जब मैं आपके सामने इस विषय में कुछ कहने के लिए खड़ा हूं, इस बीच की अवधि में तेजी से कई ऐसी घटनाएं घटी हैं, जिन्होंने इस पूरे विषय को एक अलग तरह से सामयिक बना दिया है, एक नया मतलब दे दिया है. उन सारी घटनाओं को मैं एक-एक कर गिनाऊं तो बहुत सारा समय जाया होगा. लेकिन महुआ मोइत्राजी का जिस तरह से संसद से निष्कासन हुआ, जितनी खुशी से उनका निष्कासन किया गया वहां से लेकर कल या परसों संसद भवन में जो दो लड़के दर्शक-दीर्घा से कूद पड़े, कुछ धुंआ आदि उड़ाते हुए, संसद में यहां-वहां भागते फिरे और फिर गिरफ्तार हुए, वहां तक लगातार घटनाओं का सिलसिला है. इन सबके बीच संसद के अंदर जो हुआ, संविधान का संदर्भ लेकर पिछले दिनों हमारे सर्वोच्च न्यायालय में जो कुछ हुआ, हमारे चीफ जस्टिस ने टिप्पणियों में और फैसलों में जो कुछ कहा, चाहे वह धारा 370 को लेकर हो या अभी चुनाव आयोग के गठन के बारे में हो, वे सब आज के मेरे विषय को कितने ही स्तरों पर समझने की चुनौती देते हैं. लोकसभा सर्वोच्च न्यायालय को बार-बार आईना दिखा रही है और हमारा सर्वोच्च न्यायालय मुंह फेर रहा है. मेरी तरह आपके मन में भी यह सवाल उठता होगा, उठना चाहिए कि यह सब जो हो रहा है इसके बीच हमारा संविधान कहां है?

यह व्याख्यानमाला राजेंद्र बाबू की स्मृति में है– एक ऐसे आदमी की स्मृति में, जिसका हाथ पकड़कर हमारा इतिहास महात्मा गांधी तक पहुंचा है

यह व्याख्यानमाला राजेंद्र बाबू की स्मृति में है– एक ऐसे आदमी की स्मृति में, जिसका हाथ पकड़कर हमारा इतिहास महात्मा गांधी तक पहुंचा है. अगर बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद और राजेंद्र प्रसाद नहीं होते, तो गांधीजी का चंपारण सत्याग्रह इतना आसान नहीं होता. भारत की आजादी की लड़ाई को भी और उस लड़ाई के बाद बनने वाले आजाद भारत को भी गढ़ने में जिन लोगों ने गहरी व अग्रणी भूमिका अदा की है, उनमें राजेंद्र प्रसाद का नाम बहुत ऊपर आता है.

अभी ही, कुछ दिन पहले मैं अनिलजी के ही निमंत्रण पर पटना गया था. कहूं तो सदाकत आश्रम गया था. सदाकत आश्रम वह जगह है जहां से राजेंद्र